अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रमुख राज्येत्तरकर्ता

डॉ0 ज्योत्स्ना गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रारम्भिक काल में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के कर्ता सम्प्रभु राज्य होते थे, लेकिन वर्तमान में अनेक प्रकार के राज्येत्तरकर्ता अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय हैं जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक रूप से विश्व राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं, अध्ययन के दृष्टिकोण से इन राज्येत्तरकर्ताओं को इनकी प्रकृति के आधार पर विभाजित किया गया है, यथा–बहुराष्ट्रीय निगम, गैर–सरकारी संगठन, अन्तर सरकारी संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन, धार्मिक संगठन, गुरिल्ला एवं आतंकवादी संगठन। इनमें से कुछ संगठन राष्ट्रों द्वारा मान्यता प्राप्त है, कुछ राष्ट्रों की सहमति से गठित हैं तो कुछ संगठन राष्ट्रों द्वारा प्रतिबन्धित हैं।

मुख्य शब्द– *अन्तर्राष्ट्रीय, राज्येत्तरकर्ता, संगठन, उद्देश्य, समूह*

मानवीय एवं सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति में निरन्तर परिवर्तन के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रकृति में भी कई प्रकार के परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। पूर्व में सम्प्रभु राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्रबिन्दु थे। अन्तर्राष्ट्रीय कानून भी राज्यों की स्वीकार्यता पर आधारित है जिनके द्वारा राष्ट्रों के परस्पर सम्बन्धों का निर्धारण होता है, लेकिन वर्तमान में 193 संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्प्रभु राष्ट्रों के अतिरिक्त हजारों राज्येत्तरकर्ता अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं। राज्येत्तरकर्ता ऐसे व्यक्ति या संगठन हैं जिनका किसी देश या राज्य से विशिष्ट सम्बन्ध ना होते हुए भी वे राजनीतिक रूप से प्रभावी होते हैं व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अपनी भूमिका निर्वाहित करते हैं। राज्येत्तरकर्ताओं के पास अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त जनसमर्थन के साथ राजनीतिक, आर्थिक शक्ति भी होती है। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के समुचित अध्ययन के लिए सम्प्रभु राष्ट्रों के व्यवहार के साथ–साथ राज्येत्तरकर्ताओं की अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भूमिका का ज्ञान भी आवश्यक हो गया है।

राज्य और राज्येत्तरकर्ता में अन्तर के दृष्टिकोण से देखें तो प्रथम राज्य एक स्वतन्त्र भौगोलिक इकाई है जो अपने अधिकार क्षेत्र में सम्प्रभु हैं एवं उसकी एक मान्यता प्राप्त सरकार होती है। इसके विपरीत राज्येत्तरकर्ता के अन्तर्गत जो संस्थाएँ सन्निहित है, वह स्वयं के औपचारिक अधिकार क्षेत्र और सरकार जैसी संस्था से विहीन होती है। इसके बावजूद भी वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं, उदाहरण स्वरूप विभिन्न गैर–सरकारी संगठन, संयुक्त राष्ट्र, नाटो, यूरोपीय संघ, अनेक आतंकवादी संगठन, बहुराष्ट्रीय निगम, अनेक धार्मिक संगठन इस क्षेत्र में क्रियाशील हैं। द्वितीय अन्तर के दृष्टिकोण से राज्य में राज्य या राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों की औपचारिकता, युद्ध, कूटनीति, मित्रता, व्यापार, समझौता आदि क्रियायें भी समाहित हैं, जबकि राज्येत्तरकर्ता में इन सबका अभाव है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राज्येत्तरकर्ताओं का अस्तित्व विद्यमान था, सन् 1901 में ऐसे संगठनों की संख्या 180 थी, जबकि वर्तमान में इनकी संख्या असंख्य हैं, जिनकी गणना दुष्कर हैं। वर्तमान में विभिन्न प्रकार के राज्येत्तरकर्ता विश्व राजनीति में सक्रिय हैं, जिन्हें सुविधा की दृष्टि से विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है, यथा–

प्रथम बहुराष्ट्रीय निगम वर्तमान में सर्वाधिक प्रभावी राज्येत्तरकर्ता है, जो सभी सम्प्रभु राज्यों में कार्यशील है, जैसे–शैल, वार्कलेज, ब्रेक, इन्टेल, नेसले सोनी, कोकाकोला, कार्टलेक्स आदि प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय निगम विश्व के विभिन्न देशों में कार्य कर रहे हैं। जनरल मोटर्स, स्टैण्डर्ड ऑयल और फोर्ड, अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की वार्षिक बिक्री भारत के कुल राष्ट्रीय उत्पादन के बराबर हैं। अमेरिका की दस, ब्रिटेन की पाँच और तीन स्विस कम्पनियाँ पूंजीवादी जगत के कुल उत्पादन का क्रमशः 40 प्रतिशत, 30 प्रतिशत, 20 प्रतिशत उत्पन्न करती है। पाँच सौ बड़ी अमेरिकी कम्पनियाँ अमेरिका के कुल उत्पादन के साठ प्रतिशत पर नियन्त्रण करती हैं। मध्यपूर्व के तेल भण्डार के अधिकांशतः भाग, अंगोला के सोने, लोहे तथा तेल के भण्डारों पर इन कम्पनियों का नियन्त्रण है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ द्वारा यदि किसी राज्य का निर्णय उनके अनुकूल नहीं हैं तो वहाँ राजनीतिक हत्यायें कराने, सत्ता परिवर्तन जैसे कार्यों में भी संलिप्त रही हैं, इस प्रकार राज्येत्तरकर्ता के रूप में यह बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ विश्व राजनीति को प्रभावित कर रही हैं।

द्वितीय गैर–सरकारी संगठन, नागरिक समाज का अंग है जो विकासात्मक कार्यों में बिना स्वार्थ के उद्देश्यों से संलग्न रहते हैं। विश्व के प्रमुख गैर–सरकारी संगठनों में अमेरिका में फ्रीडम हाउस, फ्रांस में मेडिसन सेन्स फ्रन्टीयर्स, इंग्लैण्ड में पापुलेशन कर्सन तथा वाटर एड का नाम प्रमुख हैं। जून 1992 में सम्पन्न हुए रियो पृथ्वी सम्मेलन तथा दिसम्बर 1997 में सम्पन्न ग्लोबल वार्मिंग पर हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अनेक देशों के प्रमुख गैर–सरकारी संगठनों ने सहभागिता कर पर्यावरणीय मामलों को प्रभावित करने का प्रयास किया। सिएटल में सम्पन्न विश्व व्यापार संगठन के तृतीय मन्त्री स्तरीय सम्मेलन के अवसर पर अनेक गैर–सरकारी संगठनों ने प्रदर्शन का आयोजन कर प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया। इस प्रकार वर्तमान में गैर–सरकारी संगठन अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में सहभागिता के साथ–साथ अपने देश की सरकारों पर प्रभाव डालकर भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करते हैं।

तृतीय, अन्तरसरकारी संगठन ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है, जिनका निर्माण समान समस्याओं को हल करने के लिए किया गया है जिनके लिए वैधानिक अधिकार और कर्त्तव्य भी निर्धारित किये गये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में, संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्को, डब्लू0एच0ओ0, आई0एल0ओ0, डब्लू0टी0ओ0 और राष्ट्र मण्डल प्रमुख हैं, इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में कुछ क्षेत्रीय स्वरूप वाले संगठन भी प्रभावी हैं, जैसे–इस्लामिक सहयोग संगठन जिसकी स्थापना 25 सितम्बर 1969 में हुई, इसका मुख्यालय जेद्दा सऊदी अरब में है। यह इस्लामी देशों के मध्य सभी विषयों में सहयोग करता है। अफ्रीकी एकता संगठन भी एक क्षेत्रीय संगठन है, जिसकी स्थापना 25 मई 1963 में ईथोपिया की राजधानी अदिसअबाबा में तीन देशों द्वारा की गई थी, वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 51 है। इस संगठन के प्रमुख उद्देश्य उपनिवेशवाद, नस्लवाद का विरोध, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक प्रगति के लिए सहायता करना, प्रादेशिक अखण्डता तथा राजनीतिक स्वतन्त्रता की रक्षा, आपसी सम्बन्धों की माधुर्यता आदि है। एक अन्य प्रमुख क्षेत्रीय संगठन 'ओपेक' पेट्रोलियम निर्यातक देशों का एक संगठन है जिसका प्रमुख कार्य तेल की कीमतों को नियन्त्रित करना रहा है। इसकी स्थापना सितम्बर 1960 में ईराक की राजधानी बगदाद में

हुई। एक अन्य अन्तरसरकारी प्रमुख संगठन अंकटाड (संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन) संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था है जिसकी स्थापना 30 दिसम्बर, 1964 को हुई थी, इसका मुख्यालय जेनेवा में है। यह संस्था व्यापार, निवेश और विकास के विषयों से सम्बन्ध रखती है।

ग्रुप–77 एक प्रमुख अन्तरसरकारी संगठन है। 1960 के दशक में संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों में अफ्रीकी राज्यों की सदस्य संख्या 77 थी जो अपने समूह को ग्रुप–77 कहते थे। मूलतः यह एक अफ्रीकी संगठन है जिसमें तीसरी दुनिया के अन्य देशों के सम्मिलित होने के पश्चात् इसकी वर्तमान में संख्या 130 है, लेकिन यह ग्रुप–77 के नाम से ही प्रसिद्ध है। इन सभी देशों की एक प्रमुख माँग नयी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना है। संयुक्त राष्ट्र से ग्रुप–77 की अपेक्षा रही है कि वह संघ के अभिकरण को नयी आर्थिक व्यवस्था के निर्माण में सक्रिय करे। यह समूह तृतीय विश्व के देशों को एकता के सूत्र में बाँधता है क्योंकि तृतीय विश्व के देशों के आर्थिक हित समान हैं। नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना की माँग के अतिरिक्त यह संगठन, समुद्र से सम्बन्धित विधि, शस्त्र नियन्त्रण, आणविक ऊर्जा, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार जैसे विषयों पर निर्णयों को प्रभावित करना चाहता है। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर जी–77 देश विभिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। जी–77 के अन्तर्गत एक अन्य समूह भी है जो जी–24 के नाम से जाना जाता है। अल्जीरिया, अर्जेन्टीना, ब्राजील, चिली, मिस्र, भारत, इण्डोनेशिया, ईरान, जमैका, केन्या, मलेशिया, मेक्सिको, नाइजीरिया, सेनेगल, श्रीलंका, वेनेजुएला, जिम्बाम्बे देशों का समूह जी–15 की स्थापना 1989 में हुई थी, जिसका प्रमुख उद्देश्य विकासशील देशों के मध्य पारस्परिक लाभकारी सहयोग की स्थापना हेतु व्यापक क्षमताओं का उपयोग करना, विकासशील देशों पर परिवर्तित होती हुई विश्व की आर्थिक स्थिति और उसके अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर प्रभाव की समीक्षा करना आदि है। इस संगठन का उद्देश्य विकासशील राष्ट्रों के मध्य नीतियों में समन्वय करने के साथ–साथ दक्षिण–दक्षिण सहयोग तथा उत्तर–दक्षिण संवाद को विकसित करना भी है। एक अन्य प्रमुख अन्तरसरकारी संगठन आसियान की स्थापना सन् 1967 में दक्षिण–पूर्व एशिया के पाँच प्रमुख राष्ट्रों द्वारा क्षेत्रीय सहयोग के उद्देश्य से की गयी, वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 10 है। भारत इसमें आंशिक एवं पूर्ण संवाद सहभागी एवं रूस और चीन पूर्ण संवाद सहभागी के रूप में हैं। इसका प्रमुख उद्देश्य आर्थिक प्रगति को तीव्र कर आर्थिक स्थिति के स्थायित्व को संतुलित रखना है। यह संगठन किसी महाशक्ति से सम्बद्ध नहीं है। जो दक्षिण–पूर्वी एशियाई राष्ट्र इसके लक्ष्यों से सहमत हैं, वह सभी इसकी सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं। एक अन्य अन्तरसरकारी संगठन दक्षेस (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ) की स्थापना सन् 1985 को ढाका में सात देशों (भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, मालदीव, भूटान) द्वारा हुई थी, बाद में अफगानिस्तान भी इसका सदस्य बना। यह दक्षिण एशियाई देशों का आर्थिक राजनीतिक सहयोग के उद्देश्य से स्थापित किसी भी क्षेत्रीय संगठन की तुलना में जनसंख्या की दृष्टि से सबसे प्रभावी संगठन है।

एपेक (एशिया पैसिफिक इकोनोमिक कारपोरेशन) सदस्य राष्ट्रों के लिए एक अन्तरसरकारी मंच है, जिसका उद्देश्य एशिया प्रशान्त महासागर क्षेत्र में सतत आर्थिक विकास एवं समृद्धि का समर्थन कर यूरोप से परे कृषि उत्पादों और कच्चे माल के लिए नवीन बाजार स्थापित करना है। हिमतक्षेस (हिन्द महासागर तृतीय क्षेत्रीय सहयोग संगठन) हिन्द महासागर के तीनों प्रायद्वीपों एशिया, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया को एक साथ जोड़ने वाला अन्तरसरकारी संगठन है जिसका उद्देश्य इस क्षेत्र में सहयोग एवं अन्तर महाद्वीपीय व्यापार में प्रगति लाना है। बिम्स्टेक बंगाल की खाड़ी से संलग्न सात राष्ट्रों का एक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक तकनीकी सहयोग संगठन है। इसका प्रमुख उद्देश्य विकासात्मक, तटस्थता एवं पंचशील की नीति का अनुगमन करते हुए क्षेत्रीय सहयोग और अन्तर महाद्वीपीय व्यापार में प्रगति करना है। डी–8 (डेवलपिंग–8) एक आर्थिक सहयोग संगठन है जो विकासशील–8 के नाम से भी जाना जाता है। बांग्लादेश, मिस्र, नाइजीरिया, इण्डोनेशिया, ईरान, मलेशिया, तुर्की, पाकिस्तान इसके सदस्य राष्ट्र हैं। यह विश्व की बड़ी जनसंख्या वाले विकासशील इस्लामिक राष्ट्रों के मध्य सहयोग को विकसित करने के उद्देश्य से स्थापित संगठन है। इस संगठन के प्रमुख उद्देश्य विश्व की आर्थिक व्यवस्था की स्थिति में सुधार के प्रयत्न, व्यापारिक सम्बन्धों में नये अवसरों का निर्माण, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता में वृद्धि एवं जीवन स्तर में उत्तम अवसर प्रदान करना है। नाफ्टा (उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता) अमरीका, कनाडा, मैक्सिको के मध्य माल ढुलाई पर कर समाप्ति के उद्देश्य से जनवरी 1994 में स्थापित एक अन्तरसरकारी संगठन है। इसके अन्तर्गत मुद्राधिकार, पेटेन्ट और ट्रेडमार्क की सुरक्षा का भी प्रावधान है। वर्तमान में नाफ्टा का स्थान न्डब। (यूनाइटेड स्टेट्स मेक्सिको, कनाडा, एग्रीमेंट) ने ले लिया है जिसमें ट्रेडमार्क, पेटेंट और मुद्रा को लेकर नियमों का सरलीकरण किया गया है। अपने संस्थापक राष्ट्रों (भारत, रूस, ब्राजील, चीन, दक्षिण अफ्रीका) के अंग्रेजी के प्रथम अक्षरों के नाम से सन् 2006 में स्थापित संगठन ब्रिक्स (ठत्प्ै) का उद्देश्य ब्रिक्स एवं अन्य उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के साथ–साथ विकासशील देशों की आधारभूत संरचना एवं सतत विकास परियोजनाओं का समुचित कार्यान्वयन है। एक अन्य अन्तरसरकारी संगठन शंघाई सहयोग संगठन की स्थापना सन् 2001 में चीन, कजाकिस्तान, रूस, किर्गिस्तान, तजाकिस्तान और उजबेकिस्तान द्वारा सम्बन्धित क्षेत्र में शान्ति, सुरक्षा व स्थिरता बनाये रखने के उद्देश्य से की गयी। विश्व की सात बड़ी विकसित और उन्नत अर्थव्यवस्था वाले समूह जी–7, जो सन् 2014 में रूस की सदस्यता के निष्कासन से पूर्व जी–8 समूह के नाम से प्रसिद्ध था, के सदस्य राष्ट्र कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्रिटेन और अमेरिका हैं। इस समूह का उद्देश्य स्वतन्त्रता और मानवाधिकारों की सुरक्षा, लोकतन्त्र और कानून का शासन और समृद्धि और सतत विकास के लिए प्रयत्न करना है। यह समूह स्वयं को कम्युनिटी ऑफ वैल्यूज मानता है। विश्व की बीस प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के वित्त मन्त्रियों और केन्द्रीय बैंक के गवर्नर के संगठन समूह जी–20 की स्थापना 1999 में हुई जिसमें यूरोपीय संघ के उन्नीस देश भी सम्मिलित हैं जिसका प्रतिनिधित्व यूरोपीय केन्द्रीय बैंक द्वारा किया जाता है। इस संगठन के सदस्य देश, अर्जेन्टीना, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, यूरोपीय संघ, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इण्डोनेशिया, इटली, जापान, रूस, मैक्सिको, सऊदी अरब, तुर्की, दक्षिणी कोरिया, दक्षिणी अफ्रीका, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका हैं। इस समूह का प्रमुख उद्देश्य वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रणालीबद्ध महत्त्वपूर्ण औद्योगिक और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के मध्य सामंजस्य स्थापित कर महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार–विमर्श करना है।

उपरोक्त अन्तरसरकारी संगठनों के अतिरिक्त कुछ गैर–सरकारी राज्येत्तर कर्ता विश्व राजनीति में सक्रिय हैं जिनका कार्यक्षेत्र राष्ट्रीय सीमाओं से परे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में व्याप्त है। वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं, ऐसे महत्त्वपूर्ण गैर सरकारी राज्येत्तरकर्ताओं में प्रमुख एमनेस्टी इण्टरनेशनल, रेडक्रास, सेव दी चिल्ड्रेन, ग्रीन पीस, केयर एण्ड ऑक्सफेम आदि प्रमुख हैं।

एमनेस्टी इण्टरनेशनल लंदन स्थित एक गैर–सरकारी संगठन है जिसकी स्थापना सन् 1961 में हुई, जिसका प्रमुख उद्देश्य विश्व में मानवाधिकारों की रक्षा करना है। वर्तमान में

इसकी सदस्य संख्या 7 मिलियन से अधिक है। एमनेस्टी इण्टरनेशनल यू0एस0ए0, एमनेस्टी इण्टरनेशनल आस्ट्रेलिया, एमनेस्टी इण्टरनेशनल फ्रांस इसकी सहयोगी संस्थायें हैं। विश्व में मानवीय मूल्यों एवं स्वतन्त्रताओं की रक्षा, भेदभाव को समाप्त करने के लिए शोध एवं प्रतिरोध तथा प्रत्येक प्रकार के मानवाधिकारों की रक्षा हेतु संघर्ष इसके प्रमुख उद्देश्य हैं। 1977 में इस संस्था को शान्ति नोबेल पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया, साथ ही 1998 में संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकारों के संरक्षण सम्बन्धी कार्य एमनेस्टी इण्टरनेशनल द्वारा सफलतापूर्वक सम्पादित किये गये।

रेडक्रॉस द्वितीय प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन है जो युद्धरत देशों को राहत पहुँचाने के कार्यों से सम्बद्ध है जिसकी स्थापना सन् 1863 में जेनेवा में हुई थी। रेडक्रास को सन् 1917, 1944, 1963 में नोबेल पुरस्कार से सम्मनित किया जा चुका है। ग्रीन पीस पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित एक विश्वव्यापी गैर–सरकारी संगठन है जिसकी स्थापना 1971 में कनाडा में हुई थी। इस संगठन की स्थापना अलास्का में अमेरिका द्वारा नाभिकीय हथियारों के परीक्षण के विरोध स्वरूप हुई थी, किन्तु इसके उपरान्त इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण हो गया। सेव द चिल्ड्रन बाल संरक्षण के उद्देश्य से सन् 1919 में यूनाइटेड किंगडम में स्थापित अलाभकारी संगठन हैं, जो बच्चों के स्वास्थ्य अधिकार से स्वयं को संलग्न करता है। एक अन्य प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन केयर एण्ड ऑक्सफेम है, जिसकी स्थापना वर्ष 1942 में गरीबों के हितों के रक्षार्थ हुई थी, यह संस्था दीर्घावधि परियोजनाओं यथा शिक्षण–प्रशिक्षण हेतु ऋण प्रबन्ध एवं आपातकाल में सहायता प्रदत्त करने का कार्य करती है।

पंचम, विश्व राजनीति को धार्मिक संगठन भी प्रभावित कर रहे हैं। इनकी अवहेलना राज्यों द्वारा सम्भव नहीं है, यह धार्मिक संगठन राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर स्वयं के धार्मिक पक्ष समर्थक देशों के समूह के रूप में कार्य करते हैं। इस समय विश्व में अनेक प्रभावी धार्मिक संगठन है जो विश्व राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं, यथा–क्रिश्चियन चर्च, रोमन कैथोलिक चर्च, बैपटिस्ट वर्ल्ड अलाइन्स, विश्व हिन्दू परिषद् आदि। इन धार्मिक समूहों का प्रमुख उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करना, धार्मिक संस्थाओं की स्थापना एवं अपने धर्मावलम्बियों के हितों की रक्षा करना है।

प्रथम धार्मिक संगठन क्रिश्चियन चर्च विशेष इसाई विश्वासियों का संगठन है जिसे कलीसिया भी कहा जाता है। इसमें आत्मिक परिवर्तन पर बल दिया जाता है। इनका आरम्भ से ही धार्मिक मामलों में ही नहीं अपितु राजनीति के सभी विषयों में हस्तक्षेप रहा है और वर्तमान समय में भी यह संगठन राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

रोमन कैथोलिक चर्च दुनिया का सबसे बड़ा इसाई गिरजाघर है जिसकी सदस्य संख्या लगभग 100 करोड़ है। इसके नेता पोप सभी धर्माध्यक्षों के समुदाय के प्रधान हैं। रोमन कैथोलिक चर्च, जिसका मुख्यालय वेटिकन सिटी है, का लक्ष्य सम्पूर्ण विश्व में यीशु मसीह के सुसमाचार को प्रसारित करने, संस्कार करवाना आदि है। एक अन्य प्रसिद्ध धार्मिक संगठन वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ रिलीजन्स की स्थापना सन् 1893 में हुई, जिसका मुख्यालय शिकागो में है। यह संस्था धार्मिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करती हैं। इसका उद्देश्य प्रमुख धार्मिक शोधकर्ताओं, विद्वानों, छात्रों, शिक्षाविदों, अनुसंधान संगठनों को एकजुट कर धर्मों एवं धर्मशास्त्रों में वर्णित प्रगतिशील घटनाओं और ज्ञान को परस्पर साझा करने के लिए एक आदर्श मंच देना है, इसके माध्यम से सभी धर्मों के मध्य संवाद स्थापित करने की कोशिश की जाती है। स्वामी विवेकानन्द ने इस सम्मेलन में हिन्दुत्व के एक प्रतिनिधि के रूप में

प्रतिभाग कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। अन्य विशाल विश्वव्यापी धार्मिक संगठन बैपटिस्ट चर्चों का विश्वव्यापी सबसे बड़ा गठबंधन है। बैपटिस्ट व्यक्ति, सम्प्रदाय और चर्च के एक समूह को जोड़ते हैं, इस संगठन का उद्देश्य विश्व के सभी बैपटिस्टों को एकत्रित कर विश्व विकास में नेतृत्व करना, जरूरतमंद व्यक्तियों की मदद करना एवं मानवाधिकारों की रक्षा करना है। विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू राष्ट्रवाद और हिन्दुत्व की रक्षार्थ जैसे उद्देश्यों से गठित एक संगठन है जिसकी स्थापना सन् 1964 में हुई।

उपरोक्त सभी धार्मिक संगठनों का उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार–प्रसार, धार्मिक संस्थाओं की स्थापना एवं अपने धर्मावलम्बियों के हितों की रक्षा व अपने धर्म और संस्कृति की पृथक पहचान बनाना है।

वर्तमान में विश्व राजनीति को प्रभावित करने वाले अनेक गुरिल्ला संगठन, आतंकवादी संगठन और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन से जुड़े अनेक संगठन क्रियाशील है, जो हिंसा, हत्या, विमान अपहरण जैसे साधनों का प्रयोग कर विश्व राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं। यह संगठन विश्व के समक्ष एक चुनौती के रूप में हैं। इस प्रकार के गुरिल्ला एवं आतंकवादी संगठनों का उल्लेख इस प्रकार है।

साउथ वेस्ट अफ्रीकन पीपुल्स आर्गेनाइजेशन की स्थापना 1960 में नामीबिया के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहभागिता हेतु हुई थी। 1990 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यह दल शासन में है। इस दल की विचारधारा स्वतन्त्रता से पूर्व समाजवाद पर, स्वतन्त्रता से लेकर 2017 तक पूंजीवाद पर और 2017 से नामीबियन विशेषताओं के साथ समाजवाद पर आधारित है।

दक्षिण अफ्रीकी मूल राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना सन् 1912 में काले दक्षिण अफ्रीकी व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा हेतु किया गया था, जिसका उद्देश्य 1948 के उपरान्त नई सरकार की रंगभेद सम्बन्धी नीतियों का विरोध जन आन्दोलन करने के रूप में हो गया। लेकिन सन् 1960 के पश्चात् इस दल पर प्रतिबन्ध के उपरान्त सरकार की रंगभेद की नीति के विरुद्ध तोड़फोड़, गुरिल्ला युद्ध जैसी नीतियों का सहारा लिया गया। यह दल एक राजनीतिक दल के रूप में पंजीकृत है एवं स्वयं को एक मुक्ति आन्दोलन के रूप सामने रखता है।

पेलस्टीन लिबरेशन आर्गेनाइजेशन (पी0एल0ओ0) की स्थापना सन् 1964 में स्वतन्त्र फिलिस्तीन राज्य की स्थापना के उद्देश्य से हुई थी। विश्व के अधिकांश राष्ट्रों ने इसे फिलिस्तीनी लोगों के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में इसे मान्यता प्रदान की। यह संगठन 1974 में संयुक्त राष्ट्र में प्रेक्षक के रूप में मान्य हुआ। मेड्रिड में हुए 1991 के सम्मेलन से पूर्व इजराईल और अमेरिका इसे आतंकवादी संगठन के रूप में ही मान्यता देते थे।

लिट्टे एक अलगाववादी संगठन है जिसकी स्थापना 1976 में उत्तर और पूर्वी श्रीलंका में एक स्वतन्त्र राष्ट्र की स्थापना के उद्देश्य से हुई, यह तमिल राष्ट्रवाद की विचारधारा पर आधारित संगठन रहा है, भारत के प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की हत्या में इस संगठन का हाथ रहा।

अलकायदा एक बहुराष्ट्रीय उग्रवादी सुन्नी इस्लामिक संगठन है जिसकी स्थापना 1980 के दशक में सोवियत संघ के अफगानिस्तान पर आक्रमण के विरोध स्वरूप कुछ अरब स्वयंसेवकों द्वारा की गई। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद्, नाटो, यूरोपीय संघ, अमेरिका आदि द्वारा इसे आतंकवादी संगठन घोषित किया गया। इस संगठन द्वारा 9/11 का हमला विश्व को दहला देने वाली घटना थी। इस संगठन का विस्तार मध्य एशिया, सोमालिया, सीरिया, यमन, माले आदि तक विस्तृत हैं।

सन् 1990 में अस्तित्व में आया हिजबुल मुजाहिद्दीन एक अलगाववादी संगठन है। भारत,

अमेरिका, यूरोपीय संघ द्वारा इस संगठन को आतंकवादी संगठन घोषित किया गया है। इस संगठन का उद्देश्य जम्मू और कश्मीर को पाकिस्तान में सम्मिलित करना है। अल जेहाद मिस्र का 1970 के दशक के अन्त से सक्रिय इस्लामी समूह है, इस संगठन ने अलकायदा के सहयोगी संगठन के रूप में कार्य किया, जिसका उद्देश्य इस्लामिक स्टेट की स्थापना है। हमास फिलिस्तीनी सुन्नी मुसलमानों का एक सशस्त्र संगठन है जिसकी स्थापना 1987 में मिस्र तथा फिलिस्तीन के मुसलमानों ने मिलकर की। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य इजराइली प्रशासन के स्थान पर इस्लामिक शासन की स्थापना करना है, गाजापट्टी इस संगठन से प्रभावित क्षेत्र है। एक अन्य इस्लामी आतंकवादी संगठन लश्करे तैयबा की स्थापना 1987 में अफगानिस्तान में हुई थी, इसका मुख्यालय पाकिस्तान के लाहौर में है। प्रारम्भ में इसकी स्थापना का उद्देश्य अफगानिस्तान से सोवियत आधिपत्य को हटाना था, लेकिन अब इसका उद्देश्य कश्मीर से भारत के शासन को समाप्त करना है। यह संगठन पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर भी संचालित करता है। जैश–ए–मुहम्मद की स्थापना सन् 2000 में एक पाकिस्तानी मसूद अजहर द्वारा की गयी थी, यह एक जेहादी इस्लामी उग्रवादी संगठन है, जिसका उद्देश्य कश्मीर से भारत के शासन को समाप्त करना है। भारत में हुए कई आतंकी हमलों में इसका नाम आया। पाकिस्तान द्वारा 2002 में इसे प्रतिबन्धित करने के पश्चात् इसका नाम 'खुद्दाम–उल–इस्लाम' हो गया। यह संगठन भारत, अमेरिका एवं ब्रिटेन द्वारा आतंकवादी संगठन घोषित किया गया है।

हरकत–उल–शबाब अल मुजाहिद्दीन जो 'अल शबाब' के नाम से प्रसिद्ध है, पूर्वी अफ्रीका स्थित एक आतंकी जेहादी कट्टरपंथी संगठन है जिसकी स्थापना सन् 2004 में हुई। इस संगठन का उद्देश्य विश्व में आतंक का साम्राज्य स्थापित करना है। इसका कार्यक्षेत्र सोमालिया, केन्या, तंजानिया, यमन, मोजाम्बिक तक है। अल शबाब का संजाल अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका तक विस्तृत हैं। तालिबान एक इस्लामिक सुन्नी कट्टरपंथी आन्दोलन है जिसकी स्थापना सन् 1994 में कंधार अफगानिस्तान में हुई। इस संगठन की सदस्यता पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान के मदरसों में पढ़ने वाले छात्रों को प्राप्त होती है। तालिबान का मुख्य उद्देश्य इस्लामिक राज्य की स्थापना करना है। एक अन्य प्रमुख इस्लामिक जेहादी सुन्नी सैन्य समूह इस्लामिक स्टेट ऑफ ईराक एण्ड सीरिया (आई0एस0आई0एस0) है। इसका गठन अप्रैल 2013 में हुआ। पूर्व में यह संगठन अलकायदा द्वारा समर्थित था, किन्तु बाद में ये दोनों संगठन अलग हो गये, यह समूह वर्तमान में अन्य सभी समकक्ष संगठनों से अधिक कुख्यात एवं सम्पन्न समूह हैं, इस संगठन का उद्देश्य विश्व के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को अपने नियन्त्रण में लेकर इस्लामिक स्टेट की स्थापना करना है।

उपरोक्त राज्येत्तरकर्ताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रभावशाली समूह वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं, जैसे–अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया समूह, जिनका प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय रूप से हैं। बी0बी0सी0, सी0एन0एन0, रायटर्स के अतिरिक्त सोशल मीडिया वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने में पूर्ण सक्षम हैं। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी समूह भी वर्तमान में प्रचारक समूहों के रूप में विश्व राजनीति में सक्रिय रहते हैं जो अपने मूल या वर्तमान क्षेत्र को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं।

विश्व के बड़े पूँजीपति एवं औद्योगिक घरानों के अतिरिक्त क्रिप्टो मुद्रा, बिटकॉइन जैसे विकेन्द्रीकृत स्वायत्त संगठन भी वर्तमान में विश्व राजनीति को राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से प्रभावित कर रहे हैं।

विश्व राजनीति में सक्रिय प्रमुख राज्येत्तरकर्ताओं के उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है

कि वर्तमान समय में परम्परागत राष्ट्रवाद एवं सम्प्रभुता की अवधारणा परिवर्तित हो गयी है। वर्तमान समय में राज्येत्तरकर्ता राष्ट्रों को आन्तरिक के साथ–साथ बाह्य नीति निर्माण में भी प्रभावित कर रहे हैं। यह राज्येत्तरकर्ता केवल राजनीतिक ही नहीं, अपितु आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, वाणिज्यिक, प्रशासनिक, सभी दृष्टियों से राष्ट्र राज्य व्यवस्था को प्रभावित कर रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं धन कुबेरों द्वारा विश्व में नव उपनिवेशवाद स्थापित किया जा रहा है। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था अधिक जटिल और समस्याग्रस्त हो गई है। राज्येत्तरकर्ता विश्व राजनीति में नकारात्मक के साथ सकारात्मक भूमिका का भी निर्वाह कर रहे हैं। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीयतावाद एवं सार्वभौमिकता की भावना को उत्पन्न करने में इन राज्येत्तरकर्ताओं का प्रमुख योगदान रहा है।

संदर्भ सूची

1. Basu Rumki, International Politics, Sage Publication, India, 2012
2. Ghosh Peu, International Relation, PHI Learning Pvt. Ltd., New Delhi, 2011.
3. Muhittin Ataman, The Impact of Non State Actors in International Politics, Alternative, Turkish Journal of International Relation, Vol. 2003, dergipark.org
4. Wagner Markus, Non State Actors, The Max Encyclopaedia International Low, Oxford University Press, 2010.
5. पंत पुष्पेश, जैन श्रीपाल, पंचौला डॉ0 राखी, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2018
6. फाडिया प्रो0 बी0एल0, फाडिया डॉ0 कुलदीप, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन, आगरा, 2021
7. काटजू मंजरी, विश्व हिन्दू परिषद और भारतीय राजनीति, ओरिएंट ब्लैक स्वान, 2013
8. https://M.dailyhunt.in/new/nepal/hindi/newsid-n169411008